2nd days

बलबन का मूल्यांकन ②

शेषभाग

बलबन ने दिल्ली या अन्य किसी स्थान पर बड़े पैमाने पर कोई भवन-निर्माण कार्य आरम्भ नहीं किया। वस्तुतः वास्तुकला के क्षेत्र में उसके शासनकाल का कोई योगदान नहीं है। बलबन ने एक विशाल व सक्षम सेना तैनात रखने पर काफी जोर दिया। उसने अपने पुत्र बुगरा खान को सलाह दी कि सेना के अलावा आय का आधा भाग आपात काल में सुरक्षा के लिए रखा जाना चाहिये।

बलबन ने व्यास नदी के समान्तर चलने वाली मुल्तान-दीपालपुर-सुनाम रेखा पर मंगोलों को रोकने में सफलता प्राप्त की। किन्तु वह लाहौर के आगे क्षेत्र से मंगोलों को पीछे धकेलने में सफल नहीं हो पाया।

छः वर्षों के लम्बे अरसे तक बंगाल में तुगरिल के विद्रोह पर काबू पाने में बलबन की विफलता इससे भी अधिक गम्भीर थी। बलबन के शासन प्रबन्ध एवं उसकी नीतियों के प्रति असंतोष बढ़ रहा था। तुर्क सैनिक अपने वेतनों से संतुष्ट नहीं हुए। बलबन की कठोरता भी तुर्कों के स्वभाव में अन्तर्भूत जनजातीय स्वतंत्रता की इच्छा को दबाने में असफल रही।

बलबन की उपलब्धियाँ उसकी असफलताओं से कहीं अधिक थी। उसने एक ऐसे राज्य-तंत्र का निर्माण किया जिसमें न केवल अपने पोषण की व स्थायित्व की क्षमता थी, बल्कि विस्तार की क्षमता भी थी जिसका परिचय बाद के खिलजी ने दिया। जबकि कालांतर में उसके द्वारा लगाई गई संकीर्ण प्रतिबद्धताएँ विखंडित हुई तथा सामर्थ्यवान व योग्य व्यक्तियों को प्रोत्साहित किया। अपने उत्तराधिकारियों के ~~लिये~~ जिन्हें उसने यह दायित्व सौंपा था।